मानवीय करुणा की दिव्य चमक

गद्यांश

–सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

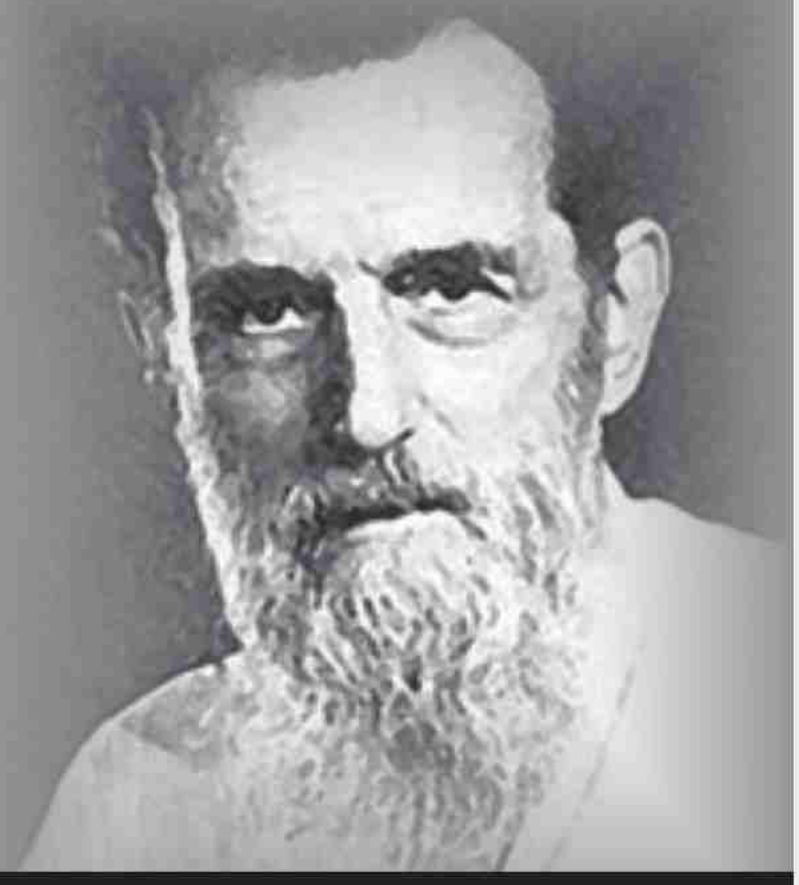

इस पाठ में फ़ादर कामिल बुल्के के जीवन की विशेषताओं का वर्णन करते हुए स्पष्ट किया गया है कि संन्यासी होते हुए भी वे पारंपरिक संन्यासी नही थे। जब तक भारत में रामकथा का अस्तित्व रहेगा तब तक फ़ादर बुल्के को सच्चे भारतीय संन्यासी के रूप में माना जाएगा। फ़ादर भारतीय संस्कृति और हिंदी से अगाध प्रेम करने वाले और मानवीयता से परिपूर्ण व्यक्ति थे।

वस्तुपरक प्रश्न

[1 एवं 2 अंक]

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. अपने अभिन्न मित्र डॉ. रघुवंश को फ़ादर क्या दिखाते थे?

(i) अपने कपड़े
(ii) अपनी माँ की चिट्ठियाँ
(iii) अपनी बहन की चिट्ठियाँ
(iv) अपने भाई की चिट्ठियाँ

उत्तर : *(ii) अपनी माँ की चिट्ठियाँ।*

व्याख्यात्मक हल : फ़ादर अपनी माँ से बेहद प्रेम करते थे इसलिए उनकी चिट्ठियों को वह अपने मित्र डॉ. रघुवंश को दिखाते थे।

2. फ़ादर को किसकी शादी की चिंता सताती रहती थी?

(i) अपने भाई की **(ii) अपनी बहन की**
(iii) अपनी **(iv) अपने मित्र की**

उत्तर : *(ii) अपनी बहन की।*

व्याख्यात्मक हल : फ़ादर की बहन बड़ी ही जिद्दी थी। उसकी शादी की चिंता फ़ादर को सताती रहती थी।

3. फ़ादर की चिंता हिंदी को किस रूप में देखने की थी?

(i) राष्ट्रभाषा के **(ii) राजभाषा के**
(iii) मातृभाषा के **(iv) कार्यालयी भाषा के**

उत्तर : *(i) राष्ट्रभाषा के।*

व्याख्यात्मक हल : फ़ादर को हिंदी से बेहद लगाव था इसलिए वे हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखना चाहते थे।

4. फ़ादर की मृत्यु कहाँ हुई थी?

(i) राँची **(ii) मुंबई**
(iii) दिल्ली **(iv) बेल्जियम**

उत्तर : *(iii) दिल्ली।*

व्याख्यात्मक हल : फ़ादर राँची में बीमार पड़े। उन्हें वहाँ से दिल्ली लाया गया और वहीं उनकी मृत्यु हो गई।

5. फ़ादर को याद करना लेखक के लिए किसके समान है?

(i) उदास शांत संगीत को सुनने जैसा
(ii) कर्म के संकल्प में भरने जैसा
(iii) मन से संकल्पशील होने जैसा
(iv) परिवार से मिलने जैसा

उत्तर : *(i) उदास शांत संगीत को सुनने जैसा।*

व्याख्यात्मक हल : लेखक के लिए फ़ादर को याद करना किसी उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है।

6. प्रभु की आस्था किसका अस्तित्व था?

(i) लेखक का **(ii) फ़ादर बुल्के का**
(iii) रघुवंश का **(iv) ईश्वर का**

उत्तर : *(ii) फ़ादर बुल्के का।*

7. लेखक फ़ादर को गले क्यों नहीं लगा पाया?

(i) क्योंकि वे उससे नाराज़ थे।
(ii) क्योंकि वे राँची में थे।
(iii) क्योंकि वे दिल्ली में थे।
(iv) क्योंकि वे मर चुके थे।

8. फ़ादर कामिल बुल्के अपने देश को छोड़कर भारत में रहने लगे थे। वे किस देश के मूल निवासी थे?
[Delhi Gov. 2021]

(i) इंग्लैंड **(ii) पोलैंड**
(iii) बेल्जियम **(iv) बुल्गारिया**

उत्तर : *(iii) बेल्जियम।*

व्याख्यात्मक हल : फ़ादर कामिल बुल्के बेल्जियम के मूल निवासी थे। इनका जन्म बेल्जियम के रेम्सचैपल में हुआ था।

गद्यांश पर आधारित प्रश्न

[बहुविकल्पीय / अति लघु / लघु प्रश्न]

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2 + 2 + 1

फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था उसके लिए इस ज़हर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछें? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था, वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दें? एक लम्बी, पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति सामने है—गोरा रंग, सफ़ेद झाई मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें-बाँहें खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हर एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब इलाहबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव में अपनी छाती पर महसूस करता हूँ। **[CBSE 2016]**

(क) गद्यांश में वर्णित साधु के रंग-रूप और व्यक्तित्व को अपने शब्दों में दो वाक्यों में लिखिए।

(ख) 'ज़हरबाद' रोग क्या होता है और गद्यांश में किस महापुरुष की ज़हरबाद से मृत्यु का उल्लेख है? वे किस रूप में प्रसिद्ध थे?

(ग) 'बाँहों का दबाव महसूस' करने का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा बताइए कि लेखक किनकी बाँहों के दबाव का उल्लेख कर रहा है?

उत्तर : (क) (1) फ़ादर बुल्के का रंग गोरा और आँखें नीली थीं। वह सफ़ेद चोगा पहनते थे।

(2) उनका मन दूसरों के लिए ममता, अपनत्व और लगाव से भरा हुआ था ।

(ख) 'ज़हरबाद' एक विषैला दर्दनाक फोड़ा होता है। गद्यांश में फ़ादर कामिल बुल्के की ज़हरबाद से मृत्यु का उल्लेख है। वे हिंदी के महान लेखक और प्रसिद्ध कोशकार के रूप में प्रसिद्ध थे।

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए— 2 + 2 + 2

फ़ादर को याद करना एक उदास (शांत) संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फ़ादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त (शामिल) रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते।

[CBSE 2010]

(क) फ़ादर को याद करना, देखना और उनसे बातें करना किन अनुभूतियों को जगाने वाला होता था?

(ख) 'परिमल' की गोष्ठियों से जुड़ी फ़ादर की किन स्मृतियों को लेखक याद कर रहा है?

(ग) घर के उत्सवों में फ़ादर की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : (क) फ़ादर बुल्के को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा था। उनको देखने से करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसी अनुभूति होती थी और उनसे बात करने से मन को कर्म के संकल्प से भरने का अनुभव होता था।

(ग) घर के उत्सवों में फ़ादर बड़े भाई और पुरोहित के समान सबको अपने आशीषों से भर देते थे। वे सबके साथ स्नेह से रहते थे और देवदार के छायादार वृक्ष समान सबको शांति और शीतलता से भर देते थे।

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5

फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए। जिसकी रगों में दूसरों के लिए मिठास भरे अमृत के अतिरिक्त और कुछ नहीं था, उसके लिए इस जहर का विधान क्यों हो? यह सवाल किस ईश्वर से पूछे? प्रभु की आस्था ही जिसका अस्तित्व था। वह देह की इस यातना की परीक्षा उम्र की आखिरी देहरी पर क्यों दे? एक लंबी, पादरी के सफ़ेद चोगे से ढकी आकृति सामने है—गोरा रंग, सफ़ेद झाईं मारती भूरी दाढ़ी, नीली आँखें, बाँहें खोल गले लगाने को आतुर। इतनी ममता, इतना अपनत्व इस साधु में अपने हार एक प्रियजन के लिए उमड़ता रहता था। मैं पैंतीस साल से इसका साक्षी था। तब भी जब वह इलाहाबाद में थे और तब भी जब वह दिल्ली आते थे। आज उन बाँहों का दबाव मैं अपनी छाती पर महसूस करता हूँ।

(क) फ़ादर की मृत्यु किस बीमारी से हुई?

(i) ज़हरबाद से (ii) कैंसर से
(iii) बुखार से (iv) मलेरिया से

(ख) गद्यांश में 'पादरी' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है?

(i) फ़ादर के लिए
(ii) लेखक के लिए
(iii) प्रियजन के लिए
(iv) सभी विकल्प सही हैं

(ग) लेखक और फ़ादर का साथ कितने वर्षों का था?

(i) पैंतीस (ii) छत्तीस
(iii) चौंतीस (iv) छब्बीस

(घ) गद्यांश की प्रथम पंक्ति में लेखक की कौन-सी भावना व्यक्त हुई है?

(i) ईश्वर के प्रति प्रेम की
(ii) ईश्वर के प्रति आक्रोश की
(iii) ईश्वर के प्रति लगाव की
(iv) ईश्वर के प्रति प्रशंसा की

(ङ) फ़ादर के मन में अपनत्व किसके लिए उमड़ता रहता था?

(i) अपने हर प्रियजन के लिए
(ii) ईश्वर के लिए
(iii) उम्र के लिए
(iv) ज़हरबाद के लिए

12. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5

आज वह नही हैं। दिल्ली में बीमार रहे और पता नहीं चला। बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया। जब देखा तब वे बाँहें दोनों हाथों की सूजी हुई उँगलियों को उलझाए ताबूत में जिस्म पर पड़ी थीं। जो शांति बरसती थी वह चेहरे पर स्थिर थी। तरलता जम गई थी। वह 18 अगस्त, 1982 की सुबह दस बजे का समय था। दिल्ली के कश्मीरी गेट के निकलसन कब्रगाह में उनका ताबूत एक छोटी-सी नीली गाड़ी में से उतारा गया। कुछ पादरी, रघुवंश जी का बेटा और उनके परिजन राजेश्वर सिंह उसे उतार रहे थे। फिर उसे उठाकर एक लंबी सँकरी, उदास पेड़ों की घनी छाँह वाली सड़क से कब्रगाह के आखिरी छोर तक ले जाया गया जहाँ धरती की गोद में सुलाने के लिए कब्र अवाक् मुँह खोले लेटी थी। ऊपर करील की घनी छाँह थी और चारों ओर काले और तेज़ धूप के वृत्त।

(क) बीमारी के दिनों में फ़ादर कहाँ रहे?

(i) रैम्सचैपल में (ii) दिल्ली में
(iii) इलाहाबाद में (iv) बेल्जियम में

(ख) फ़ादर की मृत्यु कब हुई?

(i) 18 अगस्त, 1982

(ii) 18 अगस्त, 1983

(iii) 18 जुलाई, 1982

(iv) 18 जुलाई, 1983

(ग) फ़ादर का अंतिम संस्कार कहाँ हुआ?

(i) निकलसन कब्रगाह में

(ii) राँची कब्रगाह में

(iii) पटना कब्रगाह में

(iv) इलाहाबाद कब्रगाह में

(घ) कब्र के ऊपर किसकी छाया थी?

(i) कुंजन की (ii) करील की

(iii) पीपल की (iv) बरगद की

(ङ) फ़ादर की मृत्यु पर वहाँ की सड़क कैसी हो गई थी?

(i) सँकरी (ii) लंबी

(iii) उदास (iv) चौड़ी

उत्तर : (क) *(ii) दिल्ली में*

(ख) *(i) 18 अगस्त, 1982*

(ग) *(i) निकलसन कब्रगाह में*

(घ) *(ii) करील की*

(ङ) *(iii) उदास*

13. **निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उचित विकल्प चुनिए— 1 × 5**

फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब सब एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फ़ादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मजाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारु की छाया में खड़े हों।

[Delhi Gov. 2021]

(क) लेखक के लिए फ़ादर को याद करना कैसा है?

(i) किसी धार्मिक प्रार्थना को सुनने जैसा

(ii) उदास शांत संगीत को सुनने जैसा

(iii) ईश्वर को याद करने जैसा

(iv) इनमें से कोई नहीं

(ख) 'परिमल' क्या थी?

(i) एक कार्यशाला

(ii) एक सामाजिक संस्था

(iii) एक साहित्यिक संस्था (समूह)

(iv) (i) और (iii) दोनों

(ग) साहित्यकारों की रचनाओं के प्रति फ़ादर की क्या प्रतिक्रिया होती थी?

(i) वे उन पर बेबाक राय और सुझाव देते थे

(ii) वे उनकी प्रशंसा करते थे

(iii) वे उनमें कमियाँ निकालते थे

(iv) वे कोई प्रतिक्रिया नहीं देते थे

(घ) लेखक को क्या याद आता है?

(i) फ़ादर के साथ गोष्ठियों में हुई बहसें

(ii) फ़ादर की मृत्यु का समय

(iii) फ़ादर से पहली बार मिलना

(iv) अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना

(ङ) उपर्युक्त गद्यांश के लेखक कौन हैं?

(i) स्वयं प्रकाश

(ii) सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

(iii) यशपाल

(iv) यतीन्द्र मिश्र

वर्णनात्मक प्रश्न

[2 अंक]

लघु उत्तरीय प्रश्न (30—40 शब्द)

14. **'परिमल' के बारे आप क्या जानते हैं? इस सन्दर्भ में लेखक को फ़ादर कामिल बुल्के क्यों याद आते हैं**

[CBSE 2019]

उत्तर : 'परिमल' हिंदी साहित्य की एक साहित्यिक संस्था थी जिसे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी साहित्य के कुछ उत्साही युवकों ने मिलकर बनाया था। फ़ादर बुल्के इस संस्था के अभिन्न अंग थे। वे संस्था की सभी गोष्ठियों में शामिल रहते, गंभीर बहस करते और बेबाक राय प्रस्तुत करते थे। उनके इसी स्वभाव के कारण लेखक को फ़ादर बहुत याद आते थे।

15. लेखक ने फ़ादर कामिल बुल्के की याद को 'यज्ञ की पवित्र अग्नि' क्यों कहा है? [CBSE 2016]

उत्तर : लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि फ़ादर कामिल बुल्के यज्ञ की पवित्र अग्नि के समान थे। जिस प्रकार यज्ञ के बाद उसकी पवित्र सुगंध वातावरण को महका देती है उसी प्रकार फ़ादर की मृत्यु के बाद उनकी करुणा से भरी हुई दिव्य ज्योति सम्पूर्ण मानवता को सुगन्धित करती है।

16. कभी क्रोध न करने वाले फ़ादर किस बात पर अकसर झुँझलाया करते थे और क्यों?

उत्तर : कभी क्रोध न करने वाले फ़ादर की एक मुख्य चिंता हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने की थी। हर मंच से इसकी तकलीफ़ बयान करते, इसके लिए अकाट्य तर्क देते। हिंदी वालों द्वारा ही हिंदी की उपेक्षा पर दुख व्यक्त करते और झुँझलाते।

17. पाठ के आधार पर फ़ादर कामिल बुल्के की स्वभावगत विशेषताएँ लिखिए।

18. 'सबसे अधिक छायादार' और 'फल-फूल गंध से भरा' कहकर लेखक ने फ़ादर कामिल बुल्के की किस विशेषता को उजागर किया है? [CBSE 2015]

उत्तर : 'सबसे अधिक छायादार' और 'फल-फूल गंध' से भरा कहकर लेखक ने फ़ादर के करुणा और वात्सल्यता से भरे हुए रूप के बारे में बताया है। उन्होंने अपने सभी मित्रों और संबंधियों के प्रति अपने संबंध को ममता, त्याग, आत्मीयता, वात्सल्यता आदि गुणों से सींचा। उनके संपर्क में आना वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने सारे दुखों को भूल जाता था क्योंकि वे सदा किसी बड़े की भाँति उन पर अपने आशीष की वर्षा करते रहते थे।

19. 'बड़े से बड़े दुख में उनके मुख से सांत्वना के जादू भरे दो शब्द सुनना एक ऐसी रोशनी से भर देता था जो किसी गहरी तपस्या से जनमती है।'— आशय स्पष्ट करें।

20. लेखक ने ऐसा क्यों कहा है कि फ़ादर को ज़हरबाद से नहीं मरना चाहिए था? [CBSE 2011, Diksha]

उत्तर : फ़ादर का मन हमेशा दूसरों के प्रति अपनत्व, ममता, लगाव और स्नेह की भावना से भरा हुआ था। वे सदा मानव कल्याण के लिए समर्पित रहते थे। उन्होंने सदा सबका भला ही किया। लेखक के अनुसार ऐसे महान व्यक्ति की मृत्यु ज़हरबाद जैसी कठिन यातना से भरी हुई बीमारी से नहीं होनी चाहिए थी।

21. फ़ादर कामिल बुल्के के बचपन में उनकी माँ ने उनके विषय में क्या भविष्यवाणी की थी? वह सत्य कैसे सिद्ध हुई? पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : फ़ादर कामिल बुल्के के बचपन में उनकी माँ ने उनके विषय में भविष्यवाणी की थी कि 'लड़का हाथ से गया।' जब फ़ादर ने इंजीनियरिंग की अंतिम वर्ष की पढ़ाई छोड़कर संन्यासी बन भारत जाने की इच्छा व्यक्त की तो उनकी माँ के द्वारा की गई भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई थी।

22. 'मानवीय करुणा की दिव्य चमक' पाठ का उद्देश्य क्या है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक ने इस पाठ के माध्यम से फ़ादर बुल्के के स्नेहमय और करुणापूर्ण व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया है। एक विदेशी होने के बाद भी फ़ादर ने भारत को अपनी कर्मभूमि बनाया। उन्होंने भारत की संस्कृति को पूरी तरह से अपनाया। अंतिम समय तक हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में देखने के लिए प्रयास किया। लेखक ने पाठ द्वारा यह शिक्षा देने का प्रयास किया है कि एक विदेशी होने के बाद भी फ़ादर भारत से इतना प्रेम करते थे तो भारतवासियों को तो अपने देश की उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए।

23. फ़ादर कामिल बुल्के के अभिन्न मित्र का नाम पठित पाठ के आधार पर लिखिए तथा बताइए कि उनकी परस्पर अभिन्नता का कौन-सा तथ्य प्रस्तुत पाठ में परिलक्षित हुआ है।

24. फ़ादर कामिल बुल्के कितने समय तक भारत में रहे और कितनी उम्र में हम सभी को छोड़कर विदा हो गए? उन्होंने भारत में कहाँ पर रहकर अपना प्रसिद्ध 'अंग्रेजी-हिंदी-कोश' तैयार किया था?

उत्तर : फ़ादर कामिल बुल्के 47 वर्ष तक भारत में रहे और 73 वर्ष की उम्र में हम सभी को छोड़कर विदा हो गए। उन्होंने राँची के कॉलेज में हिंदी और संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष के पद पर रहते हुए अपना प्रसिद्ध 'अंग्रेजी-हिंदी-कोश' तैयार किया था।

25. फ़ादर बुल्के की मृत्यु कैसे हुई थी? उनके अंतिम संस्कार के समय कौन-कौन उपस्थित थे? [Delhi Gov. 2021]

उत्तर : फ़ादर की मृत्यु ज़हरबाद से हुई थी। यह एक जहरीला फोड़ा होता है। उनके अंतिम संस्कार के समय लेखक, डॉ. रघुवंश जी का परिवार, राजेश्वर सिंह, डॉ. सत्यप्रकाश, राँची के फ़ादर पास्कल तोयना सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।